१५८८

अथ लक्ष्मी अने पार्वतीनुं

संवाद.

चोपाई.

दुखभंजन करजो सदा, गुण गाउं लक्ष्मी उमा तणा;
पातक हर सुख मंगल करो, रहन कांने चढेला संपरा.

दुहो.

माता मेरु करी घणी, न्हाया लेइ भंडार;
हरिहर सगडुं सगपणी, उलानो न्यय नार. १
केइ वार वन स्यामनो, करन लिला विस्तार;
साह न रहि तेज स्याग विन, लक्ष्मी कियो विचार. २
आव स्याम सखि मनगमे, रुग बिना न उमंग;
दीन मयोसो न्हर्यो, स्नोहली नही संग. ३

छप्पय.

अब आसोनी [illegible] म्हाली;
तिन मेरा यौं न्याय, आव वनगयं मिलमाली.
मेसों उगमें लाय, मात लक्ष्मीने विचारी;
आव मान घर न्हउं, सखी मोए नेउ हमारी.

जाके छेल घरै नहीं, कहां ईंद्राणी नारी;
आन गोपे मन नाद, सखी ओ नेह हमारी.

दुहो.

अन लखमी सलिहु, काछण को घर नीर;
मिलतो हे ईंद्रानीकु, कहु सुद्ध शरीर.

छंद चांद्रायणी ख्याल.

तजहारीये निरमण नीर दीयो, ऊठके कुमला अंगुलुछीयां;
फुल सत्तीने उज्वल साय दीयो, सोल सिंगार स्यांना लख कीयो.
चरण सुंदरी अंग थोपी धरी, सेंथे सिंदुर आडनेलार कुंडी;
चोंथी रोडा अने पिछुवा झनन, हाथ घुघरी चार अनेक घनन
फुरी अत्रोडे हीरो कमर कसी, नथ्यो नेनको काजल ओल कसी;
तनमनीयुं ले तरी तेल नरी, कुं कंठीने हांसडी हीरे जडी.
पेंउ आनवीयां नीतो नेह जनी, कपरापर गोमती धार घडी;
रीचेद छलाने अंगुठी नडी, रुख्याणीने फुलाडूल गाले जडी
असो सोल सिंगार कीये सुंदरी, मानु ऊजवल गंगामे जेनीपरी
रस सनसुना मीलगी नन कुवी, नमको रूप जरन राहेन कवि.

दुहो.

राणागर सोल अंगे धर्यो, दरपण लीयो हे हाथ;
मग्न भई तब मानुनी, देखी रूप सुनाथ.

मैं नारी श्रीकृष्णकी, लछमी मेरो नाम;
श्रीगार सोल अंगे सजी, चली ईन्द्र के धाम. २
सारथीने रथ सजकीयो, ल्लेअे ही तोखार,
पवन वेग का संचरी, आई ईन्द दरबार. ३

ईन्द्रओदनो ख्याल.

पीछे ईन्द्रके घर अयास आली, तब ईन्द्रकी [redacted]ी मीली;
अपने घरकुं सज आयत है, ईन्द्र आरत्नाय बनावत है.
पिछे ईन्द्रके आंगण साफ कीयो, फुलआली बीछानो बीछायो;
ओछाड्यो है मुजबनको तकीयो, सिंहासन आसन तैयार कीयो.
अहकेमकी थाल सोमाती भरी कुलकु[redacted] तैयार करी;
अब देखत राह खडी सुंदरी, जब क्युं न आवत सताओकरी.

दुहो.

आवत देखी लछमी, ईन्द्री ईन्द्रकी नार;
करी बधाई मोतीये, [redacted]लीयो सार. १

ईन्द्राणीः— ईन्द्रछपनी ख्याल.

कुरिणगोप गोवाल, [redacted]री;
कुरीण श्रीकृष्ण साथ, कु[redacted].
कृ[redacted]र कुरीण सकल संसार है;
मैं [redacted]कुरान सब परिवार है. १

छपय.

इंद्रनी बात त्यां हुई, इंद्र दरबार भरायो;
मळि कोड तेत्रीस, सहेस्त्र पैहारी आयो.
नृत करे त्यां नायका, सुरत रंभा सणगारी;
ताल मंग मृदंग, ओर उपंगी सारी.
तातातल थेकु तान, अनुगम लीला मन भेये;
लीले सकल सुरीजन, ऐम मन तरपत होये. १

दुहो.

ताथेइ त्यां होने लगो, नाचत रंभा ज्यांय;
इंद्राणीको मन गयो, पीयु सनमुख छे त्यांय. १

सोरठो.

चतुर नारीके नेन, चित इंद्राणीको चोर्यो;
जुमे कुंभाबेन, पीतर प्यारी यां रह्यो. १

दोहरा.

(नास्तिक नरराजनीतिविषयको.)

सोक कुपराक्रां जेवो, ज्हां न आदरमान;
सोक कुपरुष क्रां जेठवो, ज्हां न गुनको ज्ञान.
सोक कुपरसा कां जेठवो, ज्यां जेह निंदा धाम;

छपो.

ऐसो पितमे न्नणि, जात लछमीने जीयारी;
ज्ञात क्रोन घर न्नवी, न्नेउ सजि क्रोण कुमारी.
ज्ञात ब्रह्म घर न्नवी, ज्यां रंनाडे नारी;
जात गोष्ट जन न्नय, सर्गी ज्यों न्नेउ कुमारी. १

दुहो.

सघ मुसाफर दिरलहे, ज्ञावे सरणुं नराम;
कृष्ण नप्ति गीरीराम तो, नवरी फांसे फाम. १

छपो.

ऐसो पित्तमे न्नन, जात लछमीने ज्ञायारी;
ज्ञात क्रोन घर न्नवुं, क्रोण सर्गी न्नेउ कुमारी.
ब्रह्माके घर न्नवुं, ज्यां सावित्री नारी;
ज्ञात गोष्ट जन न्नय, [redacted] कुमारी. १

दुहो.

अलातो लागे घडे, [redacted]पार;
ज्ञात गोष्ट देसी जने, नघरी भीने ननार. १

छपो.

ऐसो पितमे न्नन, ज्ञात लछमीने ज्ञीयारी;

आज शिव पर जचुं जहां पारवती नारी;
जात गोष्ट जन जय, सभी जो जेह कुमारी. १

दुहो.

तीन लोक तारन तरन, अगम अगोचर अयाची रूप;
जयरामे जपरी [illegible] सो भूप. १

हरिगीत छंद.

न दोवणो वलोवणो, न धेनकुं चरावनो;
न बांधणो न [illegible] दावनो.
न आरणो न कुरणो, न वच्छकुं धवावनो;
न खावनो न पीवनो, न पूतकुं हुलावनो. १

दुहा.

हरी हरी तो अेक नदीयो, जाण्यो लोक हजार;
[illegible] पाणी पीवे, [illegible]. १
काम [illegible] करे, नीरदान [illegible];
जोगी जंगलमे जसे, [illegible]. २
जने त्यां [illegible] थलो, [illegible] गोष्ट जन जय;
पारवतीकु में मीले, [illegible]. ३

छंद [illegible]

जेसो [illegible] पारवतीकुं [illegible];

अपने घरकुं लछ आयत है, कुंअकु आदर लाय बनायत है.
पीछे उठके आंगण झाडे दीयो, अरु लाली पीछलो पीछायदीयो;
तदीयो मृग[redacted]यो, ताकि उपर रंगोली डाल दीयो.
अरु पाणीसें[redacted]ल छाज तैयार करी;
अमनें अत राह[redacted] क्युं नही आवे सतावीकरी.

दुहो.

[redacted]लछमी, लले पधारी नार;
दुरजण लेगी न्याणके, कृपा करीने अपार. १

छपय छंद.

उमया[redacted]ण गोप गोवाल, कुशल गोकुल गीरधारी;
कुशल आलको तांय, कुशलके श्रीजी की नारी.
कुशल पटराणी रुकम, कुशलके हलधर नार्य;
कुशल नंदको धाम, कुशलके जसोमती माय.
कामनी कुशल कीरता[redacted]के;
गवरी पूछे सुण लछमी, [redacted]त्र परीवारके. १

दुहो.

लक्ष्मी:—लछमी कहे गवरी सुणो, केन करो न कांई;

कहे तुम होनुं ओर है, ओर मित्र होलाई. १

छेरे.

[illegible] लच्छ यह [illegible] मान, लच्छकुं सबको चहावे;
लच्छ कुं [illegible] यार, लच्छ घर ठेठ बनावे.
लच्छकुं [illegible]कुरे, लच्छ मके सांत उगावे;
लच्छ [illegible] तानीग, लच्छ घर मल सुलावे.
लच्छको मान सब लकुतसे, चहावत है सब घडीघडी;
कहे गवरी सुण लच्छमी, संसारमें तुं सबसे बडी. १

दुहो.

गवरी कहे सुण लक्ष्मि, आतम मान है लच्छको;
जस घर नाही लच्छमी, धीक जपतार है तुच्छको. १

छपो.

जब लग नहोती लच्छ, कान गोवाल कहायो;
जब लग नहोती लच्छ, मार माहीयारी कुडायो.
जब [redacted] ता लच्छ, कामली ओढी काली;
जब लग नहोती लच्छ, गाय गोकुलमें चारी.
जब आई घर लच्छमी, तब तब त्रिलोवन पति;
कहे गवरी सुण लच्छमी, [illegible]

दुहो.

आत गोरा ऐसी बने, फिर बेठे आसन जाय,
ईश्वर [illegible] नगर फेरके, नगर करी घर मांय. १

छपो.

आसन न बेठी जाय, नगर चोरी सद्दिरावे;
बेक कोडीको माल, महीमे नाहीदिखावे.
शीघ्र ऐसी रणतुर, और [illegible];
पडे सर्पके हार, और आडंबर छावा.
सारी महीको माल, जाय जल्दी बिकावे;
कोडी नहीं ये कोय, फेर पीछो घर आवे.
अरे [illegible] देर [illegible] आत हे;
[illegible] आत हे. १

दुहो.

दौलत मे दरबारमें, बांध्यो छे नहीं पार;
कुशपत [illegible]. १

सोरठो.

मोपे कह्यो [illegible] जाय, कुंभ [illegible] आवना;
[illegible] पेडी छांया जल पे मांहे समावना. २

छपो.

(लक्ष्मिजी पूछे छे ने पार्वती ज्वाब देछे.)

तीण मागन पीउ कृष गयो, [illegible] के द्वारे,
पतीत जेउन पीउ कृष गयो, [illegible] द्राघन यारे.
पउ लग्यो पारेताए [illegible] जमुना के आरे,
अंतर के [illegible] तो तेन यार.
सं [illegible] कृष गयो [illegible] ता,
मृगछाला [illegible] गयो, उनरी गोद समारता. १

दुहो.

[illegible] गो, [illegible],
में तुम पुछुं [illegible] गो हे सो कयां रहे. १
त[illegible] सुण लछमी, तो बात कहो मोकुं गमी,
में पुछत तोकुं सुंदरी, बात कहे मोरे स्वामी. २

छपो.

हथी [illegible] कृष गयो, मार महियारी [illegible],
नाग नाथिन कृष गयो, [illegible] हे [illegible] आयन.
[illegible] कृष गयो, कृष [illegible] लायन,
[illegible] कृष गयो, [illegible],
[illegible],

[redacted] जेसा न. १

दुहो.

गवरी कहे सुण लच्छमी, तुं स बी बात मोपे कहे;

हुं तु [redacted] कहूं हे सभी, तेरो आहिर [redacted] रहे. १

छंद.

[redacted] मो कहे [redacted] तुनरे गवरी, तुंतो जोगीकी नार सदा नवरी;

तेरे जोगी पाया कुं में [redacted] कुं लगे.१

दुहा.

पार्वतिः– तुम जोगीहु [redacted] आहिर,

घाने [redacted] रीर. २

जोगो जंगलमें [redacted], जनमे सो आहीर,

[redacted] ये, दोनुं ओक शरीर. २

[redacted]

लक्ष्मी–तब [redacted] कहे र [redacted] गवरी, तुने बात कहीं सो तो लागी मरी;

तुने तात को यज्ञ तो जंगडीयो, तुने आपको शीश छेदाय दीयो.

तुने पथ्थर पेट जनम लीयो, तुने छलनी जगाइ मोरधुंय कीयो;

पार्वती – [redacted], तुने बात कहीं सो तो [redacted]

तुतो ल [redacted] रे पाला;

ते [redacted] मच्छ सो लागे ने [redacted] च्छ सो लागे, चंतर मंतर बेन बजाई.

पाति कनक की संकुल मोज पूरा, पंतर है सोऊ हाथीने घोड़ा;

नाम्पल क्षेत्र तो बंला सो तारी, कामदुगा क्षेत्र धेनक्षेसारी. २

दुहो.

तु पीवडी [redacted] गावडी, पीयर म्हारो परीयार,

म्हे गवरी सुण लक्षमी, मैं कहुं आंधु तरवार. १

छंद त्रोटक [redacted].

गवरी सुं केहु लो उके गायकुं कहये, गायकुं छोउके केहु कमाये;

कामनी तु कहो चंचल कहावे, तेरो जगत्र मैं कैसे जावे. २

दोहा.

लक्षमी [redacted] कहे म्हे गवरी सुणो, तुं पडी हमारी साथ;

हुं पसुं पेंडु मे, तुं [redacted] रा. १

गवरि [redacted] श्री रत्तरधार;

तीन लोक में कोनहे, मोही छोडावन हार. २

छंद [redacted] टेकुनी [redacted].

कजी [redacted] ले जेउ हरा, होनु [redacted] जरा;

सखो तेरे मेरे कजनाही जनी, तजा [redacted] हो रह्या तेनोमेरो धनी. १

हो [redacted] बंधव लागत जेन्ह जीये, कोने हुर हराया नहीं रहीये;

तेरे हुंपको गो लगाम दीयो, मेरे [redacted] २

तेरे हुंपकु वेकुं पाल दीयो, मेरे रीवने तो कैलास लीयो;

तेरे इंधकु [illegible] दाव्वन दीयो, मेरे शिवने इस्ती चन लीयो. ३

तेरे इंधकु [redacted], मेरे शीवने सर्प के हार लीये;

तेरे [redacted], मेरे शिवने जटामें विन्नुत लीयो. ४

तेरे इंधकु [redacted] शीवने जाडु डमरु लीयो;

तेरे इंधकु [redacted] ने मुगर कराडो लीयो. ५

तेरे इंधकु पेतांम्बर दीयो, [redacted] ने मृगकी छाल लीयो;

तेरे इंधकु भास बसंत दीयो, [redacted] भास लीयो. ६

तेरे इंधकु गरुड वाहन दीयो, मेरे शीवने नंदी बेल लीयो;

ऋली इ [redacted] कु प्यारी कर दीयो. ७

दुहो.

लक्ष्मि-तज लच्छमी कहे सुणगयरी, बेन पियारी बोल;

[redacted] सुणी, भास बसंत के तोल. १

छंद चोरकु की भास.

बेनता [illegible] भास बसंत रमे, जहां गोविंद गोपी रास रमे,

उडतो पिचकारी रंग केसरकी, छब देख जात जोत [redacted] परकी.

रंग लाल हो लाल ने लाल लता, [illegible] आय रमे तन भत;

घरघर ताल मृदंग मची, डरु ढांझकी पोतनी धूम मची. १

दुहा.

होळीला दकिा इरे, [illegible] लमर [illegible] तं;

पन अंघापन के सबे, न्यां [illegible] १
के नुं [illegible] मोर;
किन अंघापन निरख्यो नहीं, वाको लाग्य नजोर. २
पार्वती–जेही वसंतकी सायबी, जेही वसंतको मुख;
हरषे होवी प्रगट है, पीछे उडती [illegible] ३
वसंतको परसन कह्यो [illegible];
[illegible] ग्रानुगास. ४

छंद मोटकनी चाल.

श्रिवता [illegible] नाँ [illegible] जीव मने;
जरनां झरनां जरु नीर झरे, यहां गलां सनोपर नीर लरे. १
गौ [illegible] लखेत खेती करे;
पीउ पीउ वपैयाने मोर करे, लीलांबर लूमिव पोते धरे. २
[illegible] नुणता सकु सक्रमी नोक लथा;
घणघणे [illegible] घर घणा, सभी श्रावणमासमां नहीं रमणा. ३

दुहा.

लक्ष्मि–लक्ष्मी कहे सुण गवरी, तुं लेडी हमारी साथ;
हीर धरावुं टोकरी, [illegible] कैलास. १
पार्वति–कैलास मेरे कर्मको, को ग [illegible] डाघन हार;
लि [illegible] २

हीरा हृदयमां जडु धरीने [redacted];

श्यामकुं [redacted] केली । ३

[redacted];

उ[redacted] लछमी ध्यान दीध । ४

नारद-नारदकुं लछमी र नो, [redacted]ने सही;

ध्यास तनवुं [redacted] मनघडी । ५

लक्ष्मि-तब लछमा कहे नारद र नो, एक हमारी बात;

मे गई ती कैलासमें, लेगन सही मुन साथ । ६

नारद-नारदकु लछमा सुनो, सदाशिव सा ठोर;

[redacted], शंकर साथे जोर । ७

[redacted], [redacted];

सदाश लगाती ध्यानमें, [redacted] । ८

लगाई न ी नंचकी, ध्यान न ही तं ;

बेठो गवरी [illegible], जाये लगते मंत्र । ९

नाराच छंद.

उमान उमया [redacted];

गुर्वेन आप आपिया, क [redacted] । १

दुहो.

अर्ध पादपूल करी, [illegible] आदर अतीमा ;

गवरी कहे नारद सुणो, घर आवे भगवान. १

छंद तोटक चाल.

त्यारे बोलीया नारद देव ऋषी, तुं तो आद्य शक्ति मांछेरे सती,
भवे तुं त्रिलोकनो तो मांहे मथी, तुज थी मोटी नारी कोय नथी.
तने भोग भाग्य भुग भारे कहे, ताहरो पार परमेश्वर नाही लहे;
तारे घेर भंडार कुबेर तणा, [illegible] जेनु बातमां नाही मणा.
तारा पीउडाने तो पेर नही, ते तो सुभने केम गमेल सही,
ते तो भ्रमशानमां [illegible] रहे, [illegible] नव लहे.

दुहा.

पारवती - [illegible],
करे मानी भ्रण मानीति, अर्थ सरे त्यां सार. १
गवरी कहे नारद सुणो, तम बेठा [illegible];
अवधो घालो भन मही, [illegible] २
स्वभाव भे नारद तणो, [illegible] आप;
तमो सगणुं क्यां [illegible] आप. ३

छंद तोटक चाल.

शीरीबन्न मुखथी जनो आप मुषी, त्यांथी भागीया नारद देव ऋषी,
[illegible]

दोहा.

नारद— नारद कहे लक्ष्मि सुणो, [illegible] गयो तमारे शाल,
नेंह [illegible] तणी, [illegible] ने शक्तिये आप्यो जाल. १
लक्ष्मि कहे नारद [illegible], [illegible];
[illegible] न गया [illegible] तेणो नाथ. २

[illegible]

नारदजी [illegible] गी, तेणो मापित तपस्या करे छे घणी;
इथी नारद आव्या छे ज्यां तहां, त्रिनेत्र तपस्यामां छे ज्हां. १

दोहा.

साचे [illegible] नहिं, [illegible];
जेह वचन जे [illegible] कहुं, [illegible] कैलासे जाय. १

छंद [illegible] नीयार.

नारद— जोगी [illegible] जंगलध्यान धरे, जोगी [illegible] तपस्या करे;
जोगी [illegible] कंठमें सर्प धरे, [illegible] कहुं [illegible].
तेरी पार्वती तो [illegible] नासमां [illegible] नहीं;
तेरो नंदी [illegible] घास नहीं [illegible] नाथ मलोने तमे [illegible] तही.
जेवी नारद [illegible] वात कही, तारे शंकरने [illegible] सुरता गई;
[illegible]

त्यारे मातादे [illegible] करो.
[illegible] करी;
घणो गांमने पंर रो लव करी, घणी घुंटेसी त्यांश आगेरत्नरी.
नहांने ते नीरने धास घणां, त्यांतो अे [illegible] णु;
त्यारे पारवतीअे [illegible] तेस धरी.
त्यांरो पारवती पीउ पीउ करे, त्यांरे संकर तेसी धरोनेपरे;
पीउ रोरे गुनो अपराध कीतो अे अपार आवळा रोरो करयो.
हुंतो धातननणुं पीयर तणी, मारे मांह छे तम सरीखा घणी;
अेयां [illegible], त्यारे संकरनां अंग सीतळ थयां.
हवे संकर [illegible] तोने धाद थयो छे तारी [illegible] ती;
आपणे घेररोले आव्यां साहेम, [illegible].

दुहो.

पारवती [illegible] अोलीआं, [illegible] त्नोणानाथ;
साहेम [illegible], [illegible]. १

छंद त्रोटक [illegible].

आपणे देर लेने आव्यां साहेम, [illegible] धाल [illegible] तेतो मुने गमो;
त्यारे अेणीअे कंध लीआरीक [illegible] अेने [illegible] लीआरी [illegible].
अेमअोलतां अोलतां रात धई, त्यारे अेतो रीसालेने [illegible] गई;
[illegible] अे पीला [illegible]. मजआगळ वात [illegible].

દોહરા.

ર્વતી-ગવરી કહે શંકર સુણો, એક હમારી વાત;
કહો મોરા કૈલાસપતિ, [illegible] ૧

[illegible]ર-વનમાં જઈને તપ કરૂં, ધરવા હરીનું ધ્યાન;
વનમાં [illegible] ૨

સહાય આપણે [illegible] ધાય,
શંકર કહે સુણ પારવતી, [illegible] ૩

પારવતી પ્રત્યે કહે, [illegible] નાથ;
અઘટિત તેં આચરૂં, સદા લક્ષ્મીની સાથ. ૪

[illegible] પોષણ ભગવાન છે, [illegible] અનેક હાથ;
[illegible] ૫

[illegible]કૃષ્ણ-ઘેર [illegible];
ક્રોધાતુર પાછા ફરીને, [illegible] ત્યાંય. ૬

કૃષ્ણ કહે રૂક્મણી સુણો, [illegible] તમ સાથ;
વાત [illegible] કરૂં [illegible]. ૭

[illegible]-કૃષ્ણ [illegible] કહે, [illegible];
[illegible] સદી [illegible] સાથ. ૮

કરૂં એક [illegible] વીનતી, કહેલે સાચી વાત;
કહોં મોરા વૈ[illegible]પતિ, [illegible]. ૯

[illegible] ने [illegible]

तत्वरूप लूकने वस्यो, [illegible] ओते होय. १०

[illegible] कुबेरनो, [illegible]

ओक कुंवानो ओळखो, उघाडी [illegible] होय. ११

[illegible] मोटा [illegible], मोटा [illegible] राय,

[illegible] ओरके, [illegible] १२

[illegible] उमया ओरहे, [illegible]

[illegible] १३

संसार [illegible] गो, [illegible]

[illegible] १४

[illegible] जोय न [illegible]

मोहम [illegible] मुज ओलने, [illegible] १५

[illegible]

[illegible]

[illegible], [illegible]

छोडी [illegible] करो, [illegible] १

[illegible]

[illegible] २

[illegible]